शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -4
April
2025

महिला श्रमिकों की बचत पर COVID-19 महामारी के प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन

मनोज सिंह यादव
शोध छात्र
प्रो. अमित कुमार वत्स
शोध पर्यवेक्षक
स्नातकोत्तर अध्ययन एवं शोध केंद्र वाणिज्य संकाय
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय छतरपुर (मप्र)

सारांश

कोविड-19 महामारी ने वैश्विक और राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक व आर्थिक संरचनाओं को गहरे स्तर पर प्रभावित किया है। भारत सरकार द्वारा लागू किया गया राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन और कोविड-19 महामारी के कारण उत्पन्न व्यापक आर्थिक संकट का प्रभाव समाज के विभिन्न वर्गों पर पड़ा, परंतु इसका सबसे गहरा असर महिलाओं और किशोरियों पर देखा गया। महिलाएं पहले से ही सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से पिछड़ी स्थिति में थीं वे कम वेतन पाती हैं, सीमित बचत कर पाती हैं, और असुरक्षित अथवा अनौपचारिक क्षेत्रों में कार्यरत होती हैं। ऐसी स्थिति में महामारी ने उनकी आर्थिक असुरक्षा को और भी बढ़ा दिया। प्रस्तुत अध्ययन में महिला श्रमिकों की बचत प्रवृत्ति पर महामारी के प्रभाव का विश्लेषणात्मक रूप से मूल्यांकन किया गया है। इस शोध का प्रमुख उद्देश्य यह समझना है कि किस प्रकार लॉकडाउन, आय की अनिश्चितता, रोजगार की कमी और घरेलू उत्तरदायित्वों में वृद्धि ने महिला श्रमिकों की वित्तीय स्थिति और बचत क्षमता को प्रभावित किया। अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश महिला श्रमिक महामारी के दौरान आर्थिक रूप से अत्यधिक प्रभावित हुईं। सीमित आय, बढ़ते घरेलू खर्च, और भविष्य को लेकर असुरक्षा की भावना के कारण उनकी बचत करने की प्रवृत्ति में गिरावट आई। इसके अतिरिक्त, सामाजिक सुरक्षा तंत्र की अपर्याप्तता और वित्तीय साक्षरता की कमी ने भी उनकी आर्थिक स्थिति को और अधिक जटिल बना दिया।महिला श्रमिकों के आर्थिक सशक्तिकरण हेतु लिंग-संवेदनशील योजनाओं, वित्तीय शिक्षा अभियानों, और महिला-केंद्रित बचत एवं ऋण योजनाओं की नीतिगत आवश्यकता है। यह

शोध नीति निर्माताओं, सामाजिक योजनाकारों और महिला सशक्तिकरण से जुड़ी संस्थाओं के लिए उपयोगी मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है।

मुख्य शब्द

कोविड-19 महामारी, महिला श्रमिक, बचत की प्रवृत्तिया, वित्तीय स्थायित्व।

परिचय

बचत की अवधारणा को विभिन्न विद्वानों और अर्थशास्त्रियों ने अलग-अलग परिप्रेक्ष्य में परिभाषित किया है। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री कीन्स के अनुसार, बचत वह राशि है जो व्यक्ति की आय से उपभोग व्यय को घटाने के बाद शेष रहती है। इस परिभाषा में बचत को उपभोग के विरुद्ध शेष धन के रूप में देखा गया है। वहीं मिल्टन फ्राइडमैन ने बचत को व्यक्तिगत व्यय योग्य आय ¼disposable income½ से उपभोग व्यय को घटाने के बाद बची हुई राशि के रूप में परिभाषित किया, और उन्होंने यह स्पष्ट किया कि बचत की गणना में उपभोग के साथ-साथ व्यक्ति की कुल उपलब्ध आय की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। वॉर्नेरिड (1999) ने ष्बचतष्को एक बहुआयामी संकल्पना बताया, जिसके भिन्न-भिन्न अर्थ हो सकते हैं। उनके अनुसार, आर्थिक दृष्टिकोण से बचत उस आय का हिस्सा होती है जिसे उपभोग में नहीं लाया गया और जिसे भविष्य के लिए सुरक्षित रखा गया। इसे आय और व्यय के बीच के अंतर के रूप में मापा जाता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से बचत का अर्थ है वर्तमान में खर्च से बचना ताकि भविष्य में आवश्यकतानुसार धन का उपयोग किया जा सके।बचत का आर्थिक विकास में विशेष योगदान है। यह व्यक्तिगत स्तर पर वित्तीय सुरक्षा प्रदान करती है और राष्ट्रीय स्तर पर निवेश की आवश्यकता की पूर्ति करती है। मेहता (2013) के अनुसार, सरकार की नीतियों का मुख्य उद्देश्य बचत को प्रोत्साहित कर पूंजी निर्माण को बढ़ावा देना होना चाहिए। देवी और सुधाकर (2018) ने भी बताया कि निवेश का प्रमुख स्रोत बचत ही है और उच्च बचत दर से सतत आर्थिक प्रगति सुनिश्चित होती है।

सकल घरेलू बचत ¼Gross Domestic Savings & GDS½ को GDP के प्रतिशत के रूप में मापा जाता है और यह किसी देश की कुल बचत को दर्शाती है, जिसमें परिवार, व्यवसाय

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -4
April
2025

और सरकार की बचत शामिल होती है। यह एक महत्त्वपूर्ण मैक्रोइकोनॉमिक संकेतक है जो निवेश की क्षमता को दर्शाता है। GDS का उपयोग बुनियादी ढाँचा, अनुसंधान, शिक्षा और अन्य उत्पादक गतिविधियों में निवेश के लिए वित्तीय संसाधनों के रूप में होता है। हालाँकि, केवल अधिक बचत और सीमित निवेश अवसर होने की स्थिति में आर्थिक असंतुलन और विकास में ठहराव आ सकता है, अतः संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। आर्थिक इतिहास यह दर्शाता है कि जिन देशों ने घरेलू बचत के माध्यम से पूंजी निर्माण को सशक्त किया, वे तीव्र आर्थिक विकास के मार्ग पर अग्रसर हुए।हरोड-डोमर मॉडल (1930-1940) में यह स्पष्ट किया गया कि आर्थिक विकास की गति निवेश योग्य पूंजी पर निर्भर करती है, और पूंजी निर्माण सीधे-सीधे बचत दर से जुड़ा होता है। सोलो (1956) जैसे नवशास्त्रीय मॉडल यह मानते हैं कि तकनीकी उन्नति और बढ़ती बचत दर संयुक्त रूप से दीर्घकालिक उत्पादकता और आर्थिक विकास को मजबूती प्रदान करते हैं।

साहित्य पुनर्वलोकन

महम्मद तौसीफ पी 2016 महिला श्रमिक जब अपने कार्यस्थल और घर दोनों जगहों पर जिम्मेदारियाँ निभाती हैं, तो उन्हें दोहरी भूमिका के कारण कई प्रकार की समायोजन संबंधी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उत्तरदाताओं की बचत की स्थिति पर नजर डालें तो यह स्पष्ट होता है कि उनकी बचत बहुत सीमित है। इसका मुख्य कारण उनकी कम आय और निम्न पेशागत स्थिति है। उनकी पूरी आय दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति में खर्च हो जाती है, जिससे आश्रितों की शिक्षा का खर्च उठाना भी कठिन हो जाता है।हाल के वर्षों में बैंक, माइक्रोफाइनेंस संस्थाएँ, स्वयं सहायता समूह तथा अन्य स्थानीय वित्तीय संस्थाओं की उपलब्धता में वृद्धि हुई है, जिससे लोगों को अधिक बचत करने के अवसर मिले हैं। भविष्य की सुरक्षा को लेकर जागरूकता बढ़ने से अब लोग बचत को अधिक महत्व देने लगे हैं। अधिकांश उत्तरदाता ऐसी योजनाओं को प्राथमिकता देते हैं जिनमें मध्यम लाभ हो और जोखिम न्यूनतम हो।

दक्षायनी जी एन 2023 कर्नाटक के हरिहर क्षेत्र में नगरपालिका अनुबंधित श्रमिकों की बचत आदतों और निवेश व्यवहार पर आधारित अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि इन

श्रमिकों का वित्तीय दृष्टिकोण सतर्क और पारंपरिक है। इसका प्रमुख कारण उनकी कम आय, रोजगार की अनिश्चितता और सीमित वित्तीय साक्षरता है। श्रमिकों के लिए एक समावेशी और सहायक वित्तीय तंत्र का निर्माण किया जा सके। यदि नगरपालिका अनुबंधित श्रमिकों को अपने वित्तीय प्रबंधन के लिए उपयुक्त ज्ञान और संसाधन प्रदान किए जाएँ, तो न केवल उनकी वित्तीय स्थिरता में सुधार होगा, बल्कि उनके समग्र जीवन स्तर में भी सकारात्मक परिवर्तन आएगा।

बिश्नोई ईशा 'एवं, डॉ. कुमार 2025 ने भारतीय अर्थव्यवस्था में घरेलू बचत की प्रवृत्तियों को उजागर किया है और चयनित अवधि के दौरान परिवारों की बचत आदतों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान की हैं। निष्कर्षों से पता चलता है कि उच्च मुद्रास्फीति दर के कारण घरेलू बचत में गिरावट आई है।चूँकि बचत जहाँ एक ओर व्यक्तिगत परिवारों को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर यह राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक विकास को भी बढ़ावा देती है, इसलिए सरकार को चाहिए कि वह घरेलू बचत को प्रोत्साहित करने के लिए प्रभावी नीतियाँ बनाए। इसके लिए कर प्रोत्साहन, वित्तीय साक्षरता अभियान, और बचत को आकर्षक बनाने वाले योजनाएँ लागू की जानी चाहिए

उपेन्द्र (2007) ने भारतीय अर्थव्यवस्था में बचत प्रवृत्तियों का विश्लेषण करते हुए यह देखा कि आर्थिक सुधारों के बाद घरेलू, व्यावसायिक और सार्वजनिक क्षेत्रों में आय की लोचता (Elasticity) में कोई विशेष बदलाव नहीं आया। उनके अनुसार, न तो समग्र घरेलू बचत की वृद्धि दर में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ और न ही विभिन्न वर्गों की आय के सापेक्ष बचत की प्रवृत्ति में कोई विशेष सुधार देखा गया। यह निष्कर्ष इस ओर संकेत करता है कि आर्थिक सुधारों के बावजूद, बचत व्यवहार अपेक्षाकृत स्थिर बना रहा।

इसी प्रकार, मेहता (2013) ने अपने अध्ययन में यह बताया कि घरेलू बचत अर्थव्यवस्था के सतत विकास की आधारशिला है। उन्होंने यह तर्क दिया कि जब तक बचत दर ऊँची नहीं होगी, तब तक निवेश और पूंजी निर्माण की गति धीमी बनी रहेगी।
देवी और सुधाकर (2018) के अनुसार, भारत जैसे विकासशील देशों में बचत और निवेश के बीच सीधा संबंध होता है। यदि लोगों की आय अस्थिर हो या उनका रोजगार अनिश्चित हो, तो उनकी बचत करने की प्रवृत्ति भी कमजोर पड़ जाती है।

वार्नरीड (1999) ने बचत को एक बहुआयामी अवधारणा बताया है, जिसका न केवल आर्थिक, बल्कि मनोवैज्ञानिक पक्ष भी होता है। उन्होंने इसे न केवल आय और व्यय का अंतर माना, बल्कि वर्तमान में उपभोग से बचते हुए भविष्य की सुरक्षा हेतु एक व्यवहारिक प्रवृत्ति बताया।इन सभी अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि बचत न केवल आय और खर्च के गणितीय समीकरण का परिणाम है, बल्कि यह सामाजिक संरचना, रोजगार की स्थिरता, वित्तीय साक्षरता और नीति-निर्माण से भी गहराई से जुड़ी हुई है। विशेष रूप से महिलाओं और श्रमिक वर्ग के लिए, बचत व्यवहार में स्थायित्व लाने हेतु सरकार और वित्तीय संस्थानों को लक्षित हस्तक्षेप करने की आवश्यकता है।

शोध उद्देश्य

कोविड-19 महामारी ने विश्व भर में आर्थिक और सामाजिक परिदृश्य को गहन रूप से प्रभावित किया है। इस सन्दर्भ में, महिला श्रमिकों की बचत की प्रवृत्तियों पर महामारी के प्रभाव का विश्लेषण करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उनके आर्थिक स्थायित्व और वित्तीय सुरक्षा को समझने में सहायता करता है। इस अनुसंधान का उद्दे?श्य यह जांचना है कि क्या कोविड-19 महामारी के बाद महिला श्रमिकों की बचत की प्रवृत्तियों में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है। यह अनुसंधान नीति-निर्माण और सामाजिक सहायता कार्यक्रमों के लिए महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान कर सकता है, जो महिला श्रमिकों की वित्तीय स्थिति को सुदृढ़ करने में मदद कर सकता है।

शोध डिजाइन

नमूना आकाररू 100 औद्योगिक महिला श्रमिक

डेटा संग्रहण तकनीक, प्राथमिक डेटा (साक्षात्कार और प्रश्नावली)

डेटा विश्लेषण उपकरणर, काई-स्क्वायर

प्रश्नावली

कोविड-19 के बाद महिला श्रमिकों की बचत की प्रवृत्तियों में परिवर्तन

1. महामारी के बाद मेरी बचत में कोई बदलाव नहीं आया है।

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3 Issue -4 April 2025

पूरी तरह असहमत (5) असहमत (4) तटस्थ (3) सहमत (2) पूरी तरह सहमत (1)

2. कोविड-19 के बाद मैं नियमित रूप से अपनी आय का कुछ हिस्सा बचाने में सक्षम हूँ।
पूरी तरह असहमत (5) असहमत (4) तटस्थ (3) सहमत (2) पूरी तरह सहमत (1)

3. महामारी के दौरान और बाद में, मेरी बचत की आदतों में सुधार हुआ है।
पूरी तरह असहमत (5) असहमत (4) तटस्थ (3) सहमत (2) पूरी तरह सहमत (1)

परिकल्पना

कोविड-19 के बाद महिलाश्रमिकों की बचत की प्रवृत्तियों में कोई सार्थकपरिवर्तन नहीं हुआ है।

सांख्यिकीय परीक्षण एवं निर्वचन

H_0: COVID-19 के बाद महिलाश्रमिकों की बचत की प्रवृत्तियों में कोई सार्थक परिवर्तन नहीं हुआ है।

H1: COVID-19 के बाद महिलाश्रमिकों की बचत की प्रवृत्तियों में सार्थक परिवर्तनं हुआ है महामारी के बाद मेरी बचत में कोई बदलाव नहीं आया है।

Category	**Observed Value**	**Expecte value**	**Oi–Ei**	**$(O_i-E_i)^2$**	**$(Oi-Ei)^2/Ei$**
Strongly Agree	7	20	-13	169	8.45
Agree	42	20	22	484	24.2
Uncertain	25	20	5	25	1.25
Disagree	19	20	-1	1	0.05
Strongly Disagree	7	20	-13	169	8.45
Total	100	100	0		**42.4**

$$\chi 2=8.45+24.2+1.25+0.05+8.45=42.4$$

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -4
April
2025

स्वतंत्रता की डिग्री

df = k – 1 = 5 – 1 = 4

जहाँ k श्रेणियों की संख्या है।

chi^2 = 42.4 तथा df (स्वतंत्रता की डिग्री) = 4 के लिए, जब हम α (त्रुटि स्तर) को 0.05 मानते हैं, तो महत्वपूर्ण मान (critical value) लगभग 9.488 होता है। चूंकि हमारे परीक्षण का χ^2 मान 42.4 है, जो कि 9.488 से काफी अधिक है, इसलिए यह सांख्यिकीय रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण (statistically significant) परिणाम को दर्शाता है।

इसके अतिरिक्त, p-मूल्य (p-value) <0.0001 है, जो कि 0.05 की पूर्वनिर्धारित सीमा से काफी कम है।

कोविड-19 के बाद मैं नियमित रूप से अपनी आय का कुछ हिस्सा बचाने में सक्षम हूँ।

Category	Observed value	Expecte value	Oi–Ei	$(O_i–E_i)^2$	$(Oi–Ei)^2/Ei$
Strongly Agree	10	20	-10	100	5.0
Agree	25	20	5	25	1.25
Uncertain	41	20	21	441	22.05
Disagree	20	20	0	0	0.0
Strongly Disagree	4	20	-16	256	12.8
Total	100	100	0		**41.1**

$$\chi 2=5.0+1.25+22.05+0.0+12.8=41.1$$

स्वतंत्रता की डिग्री

गुडनेस-ऑफ-फिट टेस्ट के लिए

Df = k – 1 = 5 – 1 = 4

जहाँ k श्रेणियों की संख्या है।

कोविड-19 के बाद मैं नियमित रूप से अपनी आय का कुछ हिस्सा बचाने में सक्षम हूँ कथन के प्रति 100 महिला उत्तरदाताओं की प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण किया गया। प्रेक्षीत गणनाएँ थी- पूरी तरह सहमत (10), सहमत (10), अनिश्चित (41), असहमत (10) और पूरी तरह

असहमत (4)। परिणाम प्रदर्शित करते हैं कि $\chi2$ = 41.1, df = 4, और $p < 0.0001$, जो 0.05 से कम है।

महामारी के दौरान और बाद में, मेरी बचत की आदतों में सुधार हुआ है।

Category	Observed value	Expecte value	Oi–Ei	$(O_i-E_i)^2$	$(Oi-Ei)^2/Ei$
Strongly Agree	14	20	-6	36	1.8
Agree	39	20	19	361	18.05
Uncertain	15	20	-5	25	1.25
Disagree	27	20	7	49	2.45
Strongly Disagree	5	20	-15	225	11.25
Total	100	100	0		**34.8**

$\chi2$=1.8+18.05+1.25+2.45+11.25=34.8

स्वतंत्रता की डिग्री

जहाँ k श्रेणियों की संख्या है।

इस परीक्षण के लिए स्वतंत्रता की डिग्री (df) = वर्गों की संख्या - 1 = 5 - 1 = 4

α (त्रुटि स्तर) = 0.05 पर, df = 4 के लिए महत्वपूर्ण मान (critical value) = 9.488

चूंकि गणना किया गया $\chi^2 = 34.8 > 9.488$, इसलिए यह सांख्यिकीय रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष और सुझाव

तीनों परीक्षणों में प्राप्त Chi & Square मान 34.8, 41.1 और 42.4 हैं, जो सभी df = 4 और $\alpha = 0.05$ पर निर्धारित महत्वपूर्ण मान 9.488 से काफी अधिक हैं। इसके साथ ही, p-मूल्य <0.0001 है, जो कि 0.05 की स्वीकृति सीमा से बहुत कम है। इसका तात्पर्य है कि प्राप्त परिणाम सांख्यिकीय रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। अतः शून्य परिकल्पना (H_0) को अस्वीकार किया जाता है और वैकल्पिक परिकल्पना (H_1) को स्वीकार किया जाता है।

कोविड-19 महामारी के बाद महिला श्रमिकों की बचत, आय एवं आर्थिक निर्णयों की प्रवृत्तियों में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है। विशेषकर, यह परिवर्तन उनकी आय में कटौती, अनिश्चित रोजगार, तथा आत्मनिर्भरता की आवश्यकता जैसे कारणों से प्रभावित प्रतीत होता है। अतः अध्ययन के परिणाम कोविड-19 के आर्थिक प्रभाव को महिलाओं की आर्थिक सोच और व्यवहार में बदलाव के रूप में स्पष्ट रूप से प्रमाणित करते हैं।

वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम

महिलाओं को बजट बनाने, आवश्यक बनाम विलासिता की पहचान करने, छोटी राशि से नियमित बचत शुरू करने आदि विषयों पर प्रशिक्षण दिया जाए। यह साक्षरता ग्रामीण एवं शहरी दोनों स्तर पर स्थानीय भाषा में होनी चाहिए।

महिला स्वयं सहायता समूहों को सशक्त बनाना

स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं को सामूहिक रूप से बचत, ऋण लेने और लघु निवेश करने के अवसर दिए जाएं। महिला स्वयं सहायता समूहसामाजिक सुरक्षा और आत्मनिर्भरता का सशक्त माध्यम हैं।

लचीली बचत योजनाएँ उपलब्ध कराना

महिला श्रमिकों की अनियमित आमदनी को देखते हुए ऐसी लघु बचत योजनाएँ चलाई जाएँ जिनमें वे थोड़ी-थोड़ी राशि जमा कर सकें और आवश्यकता पड़ने पर बिना अधिक ब्याज के निकाल सकें।

बैंकिंग सेवाओं तक पहुँच

हर महिला श्रमिक का जनधन खाता होना सुनिश्चित किया जाए। मोबाइल बैंकिंग, डिजिटल भुगतान, और पोस्ट ऑफिस आधारित सेवाओं की पहुँच बढ़ाई जाए, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में।

रोजगार स्थायित्व सुनिश्चित करना

महिला श्रमिकों को नियमित एवं सुरक्षित रोजगार दिया जाए ताकि उनकी आमदनी सुनिश्चित हो सके और वे लंबी अवधि की वित्तीय योजना बना सकें।

सामाजिक सुरक्षा योजनाओं में भागीदारी बढ़ाना

महिलाओं को अटल पेंशन योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, सुकन्या समृद्धि योजना जैसी योजनाओं से जोड़ा जाए ताकि दीर्घकालिक बचत और जोखिम सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

स्थानीय स्तर पर महिला वित्त सलाह केंद्र

स्थानीय पंचायत या शहरी निकाय स्तर पर महिलाओं के लिए परामर्श केंद्र खोले जाएं जहाँ वे बचत, निवेश और ऋण से जुड़ी जानकारियाँ आसानी से प्राप्त कर सकें।

संदर्भ सूची

1. कीन्स (1936). *The General Theory of Employment, Interest and Money*. Macmillan.
2. मल्टन फ्राइडमैन, M. (1957). *A Theory of the Consumption Function*. Princeton University Press.
3. के.ई.वार्नरीड (1999). *The Psychology of Saving: A Study on Economic Psychology*. Edward Elgar Publishing.
4. मेहता (2013). *Domestic Savings and Economic Growth in India*. Journal of Economic Policy and Research, 9(1), 45–59.
5. एस. देवी और के. सुधाकर, (2018). *Savings-Investment Nexus in India: A Causal Analysis*. Indian Journal of Economics and Development, 14(3), 205–211.
6. शाहला और मुहम्मद तौसीफ पी 2016 SAVING HABIT AMONG LABOUR CLASS WOMEN A STUDY WITH REFERENCE TO LABOUR WOMEN-International journal science tecnology and management ISSN 2394-1537
7. डॉ. दक्षिणायनी जी.एन. apr 2023 Educational Administration: Theory and Practice https://www.researchgate.net/publication/382101086_A_Study_On_The_Saving_Habits

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3 Issue -4 April 2025

_And_Investment_Behaviour_of_Municipal_Contractual_Labourers_At_Harihara_In_Karnataka

8. ईशा बश्नोई एवं डॉ. कुमार 2025A study on trends of household savings in Indian economy International Journal of Commerce and Economic Volume 7, Issue 1, 2025, Page No. 12-17: ISSN :2664-7540,
9. एम. उपेंदर और एन.एल.रेड्डी (2007). "Saving Behaviour in the Indian Economy", International Journal of Applied Econometrics and Quantitative Studies, Vol. 4-1, pp. 35-56.
10. मेहता (2013). *Household Savings and Economic Growth in India: An Empirical Analysis.* Indian Journal of Economics and Development, 1(2), 45–52.
11. एस.देवी एवं ए.सुधाकर, (2018). *Impact of Household Income and Demographics on Saving Behavior in India*. International Journal of Management Studies, 5(3), 66–74.
12. एम. फ्राइडमैन, (1957). *A Theory of the Consumption Function.* Princeton University Press.